International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 781-782

जन उत्थानवादी राजा सयाजीराव गायकवाड

ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा'
बडाली, विजयपुर, साम्बा, जम्मू व कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

भारत देश प्राचीन सभ्यता और संस्कृतिक से संपन्न राष्ट्र है। यहा के इतिहास और संस्कृति को देखे तो कह सकते हैं। हडप्पा और मोहजोदडो जैसे प्राचीन नगरों और नालंदा, तशशिला जैसे विश्वविद्यालयों ने इस देश की ज्ञानसम्पदा के चर्मोकर्ष का परिचय दिया। साथ ही इस देश में अहिंसा के पूजारी महात्मा बुध्द ने पूरी दुनिया को सत्य और अहिंसा की शिक्षा दी। कबीर, तुलसीदास, ज्ञानेश्वर, तुकाराम जैसे संतो ने जनमानस को सही पथ का दर्शन कराया। ऐसे पावन भूमि पर कई सारे महान विभूतियों ने जन्म लिया जिस पर सभी भारतवासियों को नाज है। इस देश में कई सारे राजे–महाराजे हुए जिन्होंने जनकल्याण का कार्य किया। शोषित, पीड़ित, दमित लोगों के उत्थान के लिए वे सदैव कटिबध्द रहे। जिनमें छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, राजर्षि शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड़ जैसे नाम गिनाये जा सकते हैं। जिन्होंने कथनी की अपेक्षा करनी को महत्त्व दिया। उन्होंने जो कार्य किये वे आज भी हमारे लिए पथ दर्शन का कार्य करते हैं। उन्होंने यहा के जन के सुख एवं खुशहाली के लिए कार्य किया। इनमें से एक नाम आता है सयाजीराव गायकवाड (तृतीय) का। जिन्होंने जन उत्थान करने वाले कई कार्य किये। जब भारत में अंग्रेजों का राज्य था। बडौदा संस्थान पर भी अंग्रेजों का अधिपत्य था। फिर भी उन्होंने किसी बात की परवाह न करते हुए बडौदा संस्थान के साथ–साथ देश के हर अच्छे कार्य के लिए मदद की। दुनिया भर की सैर कर वहां जो भी अच्छा है उसको अपने बडौदा संस्थान में शुरू किया। एक तरह से आधुनिकता का विरोध न कर जो–जो उसमें अच्छाईयाँ है उसका सहर्श स्वीकार किया। उन्होंने कई सारी विकास योजनाएँ बडौदा संस्थान में की। इस कारण आज भी लोकशाही के युग में राजा सयाजीराव गायकवाड द्वारा किया कार्य सराहनीय है।

महाराज श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड का जन्म नाम गोपालराव काशीराव गायकवाड था। उनका जन्म 6 फरवरी 1863 कवलाणा–नाशिक (महाराष्ट्र) में हुआ। उन्हें 12 वर्ष की आयु में बडौदा संस्थान के राजगद्दी पर बिठाया गया। वहां उन्हें मि.एफ.एच. इलियट जैसे गुरू मिले जिन्होंने उन्हें विभिन्न विषयों का ज्ञान दिया। उसके पश्चात 28 दिसम्बर 1881 में शिक्षा पूरी होने के बाद राजकाज संभाला। तब उन्होंने सर्वप्रथम बडौदा संस्थान को समझने के लिए पूरे संस्थान की यात्रा की। यथा –'' प्रथम दौरा कडी प्रान्त में किया। तब गाड़ियों की व्यवस्था नही थी। रास्ते भी धूल और मिट्टी से लदालद थे। बैलगाड़ी, घोड़ागाडी, तो कभी –कभी हाथी पर बैठकर गांवों का भ्रमण किया। रात में तंबू में रहते थे, अधिकारी और प्रजा से मिलकर वे अगले गांव जाते थे। साथ ही प्रजा की जो समस्याएँ है उसको जानकर लिखकर रखते थे।''[1] इस प्रकार उन्होंने प्रथम लोगों के समस्याओं को समझा और उसके समाधान हेतु कार्य करते रहे।

भारत को कृषकों का देश कहा जाता है। जहां की अर्थव्यवस्था कृषि से जुड़ी हुई है। इसलिए यहाँ के लोगों के जीवनमान का बदलना है तो सर्वप्रथम खेती की विकास करना पडेगा। यह बात छत्रपति शिवाजी ने भी जान ली थी और कृषकों के हित की कई योजनाएँ चलाई। सयाजीराव गायकवाड ने भी इसी विचारों का अमल किया। जैसे – ''राजकाज हाथ में लेते ही सबसे पहले खेती के लगान की और ध्यान दिया। राज्य में मूल आय खेती से ही मिलती है। इसलिए 1883 में भू नापना और उसका परिश्रण करना (लँड सर्व्हे सेटलमेंट) यह नया खाता शुरू किया।''[2] इस प्रकार उन्होने किसानों के उत्थान को मध्य नजर रखते हुए कार्य किया। कृषि संदर्भ में कई सारी विकास योजनाएँ चलाई। यथा–''उन्होंने 12 हजारा से अधिक कुएं बनवाये, जिसपर तीस लाख से अधिक पैसे खर्च किये। इंजिन, आईल, ट्रॅक्टर हेतु किसानों की मदद की। कुएं का पानी पीने हेतु तथा खेती के लिए उपयोग में लाया जाने लगा। पारम्पारिक खेती के साथ–साथ नये बीज से किसानों को अवगत कराया। लोहे का हल के साथ–साथ खेती संदर्भ में नये–नये उपकरण उपलब्ध करा दिये। कृषि प्रदर्शन लगवाये।''[3] इस तरह राजा सयाजीराव गायकवाड ने कृषक के उत्थान हेतु कार्य किया।

भारत देष में विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। साथ ही इन धर्मों के अन्तर्गत विभिन्न जातियाँ है और उनमें ऊँच–निचता का भेद है। ऊँच जाति के लोग निम्न जातियों के साथ दुरव्यवहार करते हैं। उन्हें निम्न दर्जे का जीवनयानपन के लिए मजबूर किया जाता है। कुछ–कुछ ऐसी जातियाँ है। जिने अछूत कहा जाता है। उनके साथ रहना–खाना तो दूर उनका स्पर्श भी निषेध माना जाता था। ऐसे समय राजा सयाजीराव गायकवाड ने अस्पृश्यों के साथ बैठकर खाना खाया। जैसे –''पुणे के महार समाज के मुखिया रा. शिवराम जानबा काबंले एवं रा. श्रीपतराव थोरात इन दोनों को महाराज ने बडौदा को आमंत्रित कर उनके साथ विचार विमर्श किया और उनका यथोचित स्वागत करते हुए खुलेआम राजमहल में आमंत्रित देकर टेबल पर सहभोजन किया।''[4] इस तरह राजा सयाजीराव गायकवाड केवल मंच पर आकर भाषण देनेवाले व्यक्ति नही थे तो उन्होने समाज सुधार को स्वयं कृति में उतारा था। तो दूसरी और आदिवासी समाज जंगलों में वास्तव्य करता था। इन आदिवासियों को शिक्षा की व्यवस्था महाराज सयाजीराव गायकवाड ने अपने राज्य बडौदा में की। यथा – ''1882 में शिक्षा के संदर्भ में प्रथम क्रांतिकारी निर्णय लिया। जिसके तहत बडौदा के सोनगढ़ इस आदिवासी भाग में अछूत एवं आदिवासी के बच्चों के लिए सरकारी खर्च से स्कूल और छात्रावास शुरू किया।''[5] इस तरह सयाजीराव गायकवाड ने शिक्षा केवल उच्चवर्ग को ही मिले यह न सोचते हुए, जो जंगल में वास करते हैं उन आदिवासियों के बच्चे भी पढ़े इसलिए स्कूल खोले। जिसके पीछे उनके महानता का पता चलता है। सयाजीराव गायकवाड ने स्त्री शिक्षा को महत्त्वपूर्ण माना

था। इसलिए स्त्री को पढ़ना–लिखना चाहिए इसके लिए भी उन्होंने कार्य किया। जब उनकी पहली पत्नी का देहान्त हुए और दूसरा विवाह जब किया जो वह पत्नी पढ़ी–लिखी नही थी तब उनके पढ़ाई की व्यवस्था की। यथा – ''देवास के घाटगे की गजराबाई के साथ उनका विवाह हुआ। रानी को पढ़ना–लिखना नहीं आता था। महाराज ने शिक्षा की तत्काल व्यवस्था की।''[6] इस तरह सयाजीराव गायकवाड नारी शिक्षा के पैरवी थे।

म्हाराज सयाजीराव गायकवाड ने विभिन्न देशों की यात्राएँ की। इसके पीछे उद्देश्य मनोरंजन न होकर उस देश में जो भी नया है, समाज उपयोगी है, उसको बड़ौदा में स्थापित करना। यह उनका प्रमुख उद्देश्य था। वे कहते हैं कि–''परदेश में यात्रा करना यह ज्ञान का प्रमुख साधन है। यह मुझे पहली विलायत यात्रा में से समझ आया। इसके आगे दुनिया भर की यात्रा करना और विश्व में जो–जो अच्छा है, वह बडौदा में लाना मैंने तय किया। इस यात्रा से मुझे यह लगने लगा की, अपने देश में उद्योग को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक शिक्षा की खास व्यवस्था जरूरी है।''[7] इस तरह उन्होंने अपने राज्य में औद्योगिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया।

वर्तमान समय में हम देखते है कि देश के सामने अकाल एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। हर साल देश के किसी न किसी हिस्से में सुखा पड़ता है। इसके पीछे वातावरण में हो रहा परिवर्तन हो या पानी का अपव्य ऐसे केई कारण है। जिसके लिए सरकार द्वारा भी कई सारे उपाय किये जा रहे हैं किन्तु 21 वीं सदी कई कारण है। जिसके लिए सरकार द्वारा भी कई सारे उपाय किये जा रहे हैं किन्तु 21वीं सदी में भी पानी समस्या को लेकर हम पूरी तरह जागरूक नहीं हुए। सयाजीराव गायकवाड ने तब पानी के महत्त्व को जाना था। वे कहते थे कि ''पानी याने ईश्वरी प्रसाद है और प्रसाद का इस तरह अपव्य करते देख मुझे दुख होता है। इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ कि, पानी यह सोने के समान है या उससे भी मूल्यवान हैं ना? उसी तरह पानी भी को भी सम्भालो। अकाल में कितना भी धन खर्च किया तो भी हम पानी की एक बुंद भी प्राप्त नही कर सकते? अपने पूर्वजों ने नदियों को देवता मानकर उनकी पूजा की, उसका मर्म अब तो तुम समझो।''[8] इस तरह पानी के महत्त्व को राजा सयाजीराव गायकवाड ने जाना था।

राजा सयाजीराव गायकवाड ने बडौदा राज्य में कई सुधारणाएँ की। इसके साथ बडौदा के बाहर भी कई सारे कार्य किये। महात्मा फुले, डॉ बाबा साहब आंबेडकर, कर्मवीर वि.रा.शिंदे और भाऊराव पाटील जैसे समाज सुधारकों को भी उन्होंने सर्वपरि मदद की। दूसरी विश्वधर्म परिषद के वे अध्यक्ष रहे। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप में स्वाधीनता आंदोलन में सहभाग भी लिया। क्रांतिकारकों को मदद की। जहाँ–जहाँ अच्छाई है उसको स्वीकार तथा अन्याय का विरोध वे जीवनभर करते रहे। महाराज सयाजीराव गायकवाड के संदर्भ में मदन मोहन मालवीय कहते हैं कि – ''ज्ञानवृध्दि, समाजसुधार एवं अनुशासनबध्द प्रशासन इन सभी बातों में सफल 'हिंदुस्तान का आखरी आदर्श राजा'।''[9] इस जनवादी राजा का अंत 6 फरवरी 1939 को हुआ। वे शरीर रूप से इस पृथ्वीलोक से विदा हुए किन्तु किर्ती रूप से आज भी समाज के दिलो–दिमाग में अजय, अमर है।

संदर्भ

1. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड – बाबा भांड पेज – 32
2. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड – बाबा भांड पेज – 36
3. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड –बाबा भांड पेज – 44–45
4. http://www.virashinde.com
5. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड – बाबा भांड पेज – 39
6. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड – बाबा भांड पेज – 33
7. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड –बाबा भांड पेज – 80–81
8. लोकपाल राजा सयाजीराव गायकवाड – बाबा भांड पेज – 51–52
9. http://mr.wikipedia.org/wiki/ महाराज सयाजीराव गायकवाड